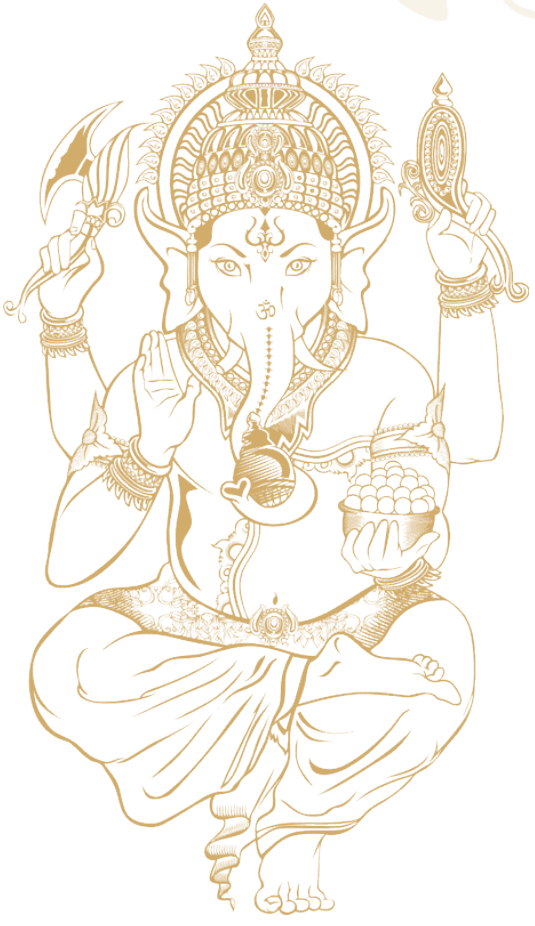

Nerissa Rawt

11 Jun 2025

11:49 PM

Gwalior

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121088601**

तिथि 11/06/2025 **समय** 23:49:00 **वार** बुधवार **स्थान** Gwalior **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:47
अक्षांश 26:12:00 उत्तर **रेखांश** 78:09:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:17:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	16:52:58 घं
वेलान्तर	00:00:19 घं
सूर्योदय	05:24:38 घं
सूर्यास्त	19:09:34 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	शुक्ल
तिथि	1
नक्षत्र	मूल
योग	शुभ
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ये-येनी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

केतु 6वर्ष 0मा 6दि

केतु

11/06/2025
18/06/2031

	11/06/2025
शुक्र	14/01/2026
सूर्य	22/05/2026
चन्द्र	21/12/2026
मंगल	19/05/2027
राहु	05/06/2028
गुरु	12/05/2029
शनि	21/06/2030
बुध	18/06/2031

योगिनी

उल्का 5वर्ष 1मा 27दि

उल्का

11/06/2025
08/08/2030

उल्का	08/08/2025
सिद्धा	08/10/2026
संकटा	07/02/2028
मंगला	08/04/2028
पिंगला	08/08/2028
धान्या	07/02/2029
भ्रामरी	08/10/2029
भद्रिका	08/08/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			12:53:35	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	बुध	---	0:00			
सूर्य			26:51:32	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	गुरु	शत्रु राशि	1.32	आत्मा	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			01:52:17	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	सम राशि	1.00	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			02:40:50	सिंह	मघा	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि	1.72	ज्ञाति	भ्रातृ	जन्म
बुध			11:20:28	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	शनि	स्वराशि	1.24	भ्रातृ	ज्ञाति	साधक
गुरु		अ	06:12:55	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	चंद्र	शत्रु राशि	1.24	पुत्र	धन	प्रत्यारि
शुक्र			11:23:34	मेष	अश्विनी	4	केतु	शनि	सम राशि	1.34	अमात्य	कलत्र	जन्म
शनि			06:54:19	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	1.02	मातृ	आयु	मित्र
राहु	व		28:46:02	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		28:46:02	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	मंगल	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

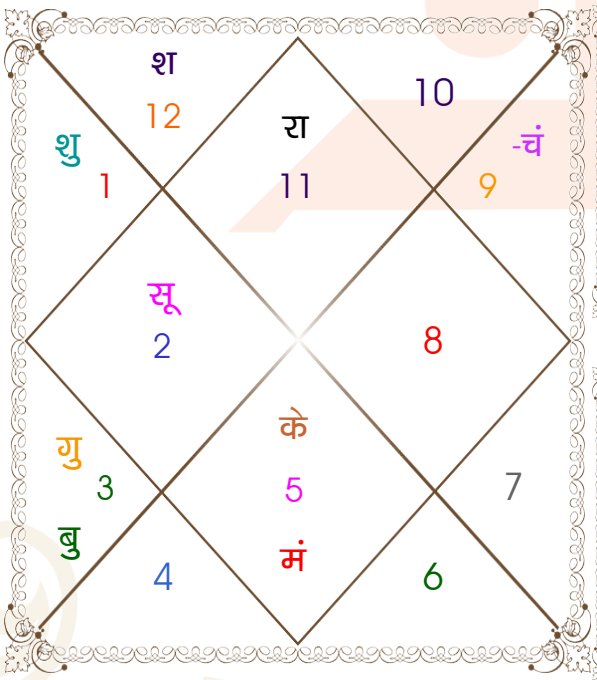

चन्द्र कुंडली

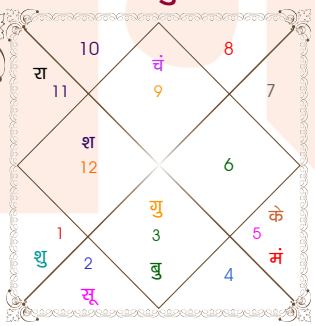

नवमांश कुंडली

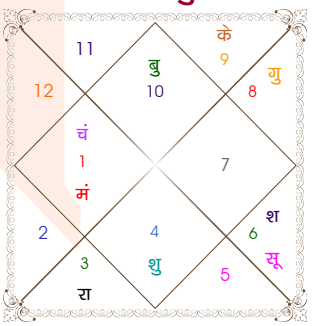

सर्वाष्टकवर्ग

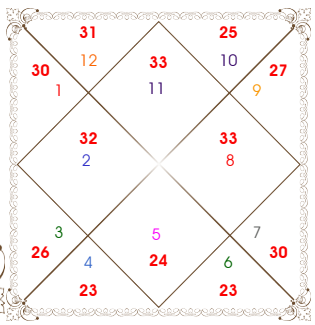

दशमांश कुंडली

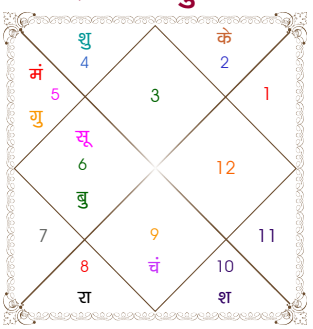

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

नक्षत्रफल

आप मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में पैदा हुई हैं अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि श्वान गण राक्षस, वर्ण क्षत्रिय, वर्ग मृग तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "ये" अक्षर से आरम्भ होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न हुई हैं। इस नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न होने से जातक के पिता को अरिष्ट होता है अतः जन्म समय में इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान से शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न कराने चाहिए तथा 27 दिन के बाद 28वें दिन जब यह नक्षत्र पुनः आए तो इस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए इस प्रकार विधिपूर्वक जप एवं हवन करने से इस नक्षत्र का अरिष्ट प्रभाव नष्ट हो जाता है तथा संबंधित जातक सुखपूर्वक रहता है।

मंत्र – ऊं अपाधमयः किल्विषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मदपटुः दुश मानसागरी

जीवन में आप समस्त प्रकार के सुखों से युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ अतुल धन वैभव की भी आप स्वामिनी होंगी तथा एक धनाढ्य महिला के रूप में समाज में विख्यात होंगी। आप वाहन आदि से भी सुसम्पन्न रह कर इसका उपभोग करने वाली होंगी। शारीरिक शक्ति का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा स्वास्थ्य भी उत्तम होगा। आपके कार्यकलाप स्थिरता से युक्त रहेंगे तथा चंचलता का भाव नहीं रहेगा। शत्रुओं को पराजित करने में आप तत्पर रहेंगी। शत्रु वर्ग आपसे व्याकुल रहेगा। आप को विभिन्न शास्त्रों के अध्ययन का भी शौक रहेगा तथा इसके ज्ञान प्राप्त करने में आप सफल भी रहेंगी। इसके अतिरिक्त यदा कदा आप जीवन में वात से उत्पन्न होने वाले रोगों से भी पीड़ित रहेंगी।

सुखेनयुक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः।।
जातकाभरण एवं मानसागरी

अर्थात् मूल नक्षत्रोत्पन्न जातक सुख से युक्त, धनाढ्य, वाहन से सुसम्पन्न, हिंसक, बलवान, स्थिरकार्य करने वाला, शत्रु हन्ता और विद्वान होता है।

वाणी से आप अत्यन्त ही चतुर होंगी तथा इसी वाक्पटुता से आपके अधिकाँश कार्यकलाप सम्पन्न होंगे। कभी कभी आप अभिमानी प्रवृति का भी समाज में अन्य लोगों के साथ प्रदर्शन करेंगी। कभी कभी आपकी बातें अप्रमाणिक भी होंगी। जिससे लोग आपकी बातों पर कम ही विश्वास करेंगे।

मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुरवाणी से युक्त, अप्रामाणिक, धूर्त, कृतघ्न तथा धनी होता है।

आप स्वर्ण पाद में पैदा हुई हैं। स्वर्ण पाद में पैदा होने के कारण जातक कई प्रकार से जीवन में दुःख एवं कष्ट प्राप्त करता है तथा इसमें उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता एवं धनाभाव से भी नित्य दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में उसे सुखसंसाधनों की भी अल्पता रहती है। जिससे उसके मन में नित्य तनाव व्याप्त रहता है। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्याधिक परिश्रम के द्वारा ही सफलता अर्जित हो सकती है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ वर्ग में स्थित है। अतः इससे आपको अशुभ फल अल्प तथा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

अतः आप जीवन में सम्पूर्ण सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य एवं नौकर चाकरों से भी आप सम्पन्न रहेंगी। आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा एक धनवान महिला के रूप में समाज में ख्याति अर्जित करेंगी। सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के वाहनादि से भी सुशोभित रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आपके पति तथा पुत्र भी सुन्दर गुणवान एवं सम्मानित रहोंगे। साथ ही सेवक गण भी गुणसम्पन्न होंगे। आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आपके लिए लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि सुख को आप प्राप्त करने में भी सौभाग्यशाली रहेंगी।

धनु राशि में जन्म होने के कारण आपका गला तथा मुख भाग दीर्घाकार होगा। आपकी भुजाएं पूर्ण रूपेण मांसल तथा मोटी रहेंगी। जीवन में आप पैतृक धन से सुसम्पन्न रहेंगी। आपका स्वभाव दानशीलता से युक्त होगा। अतः दीन दुखियों एवं जरूरत मन्द लोगों को आप दान देती रहेंगी। आपका लेखन कार्यो के प्रति भी शौक रहेगा तथा इसी क्रम में काव्य सृजन में सफलता प्राप्त कर सकेंगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल भी पूर्ण रहेगा। जिससे सब लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। भाषण देने की कला में आप निपुण रहेंगी। तथा अपने प्रभावशाली भाषणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। विभिन्न प्रकार के कार्यो को भी करने में भी आप समर्थ रहेंगी। चित्रकला के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा। आप गम्भीर प्रकृति की महिला होंगी तथा धर्म आदि शास्त्रों के विषय में आपका विस्तृत ज्ञान रहेगा। बन्धु वर्ग से आपके सामान्य संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपसे स्नेह या प्यार से कार्य सम्पन्न करवाया जा सकेगा। बल पूर्वक या दवाब से किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए कभी भी तैयार नहीं होंगी।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।

कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें सुन्दर एवं गोल होंगी तथा हाथों की लम्बाई भी अधिक रहेगी। आपका वक्षस्थल पूर्ण रूप से विस्तृत रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव आ सकता है। जल के किनारे निवास करने में आप रूचि शील रहेंगी। तथा प्रसन्नता पूर्वक ऐसे स्थानों में निवास करेंगी। आप कठिन से कठिन विषय को भी सरलता पूर्वक हृदयगंम करने में सक्षम रहेंगी तथा हृदय से हमेशा प्रसनचित्त रहेंगी। आपके शरीर की अस्थियां भी दृढ़ रहेंगी। कृतज्ञता की सहभावना से आप सुशोभित रहेंगी तथा किसी अन्य जन से उपकृत होने पर उसके पूर्ण उपकार को मानेंगी तथा उसको हृदय से आभार भी प्रकट करेंगी।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप प्रायः किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगी। निश्चिन्त होकर बैठना आपको अच्छा नहीं लगेगा। बोलने में भी आप अत्यन्त दक्ष होंगी तथा इसी वाक्पटुता से अपने अधिकाँश कार्यों को सम्पन्न करेंगी। त्याग की भावना से भी आप युक्त रहेंगी तथा समयानुसार आप इस प्रवृति का पालन करने के लिए उद्यत रहेंगी। आप एक साहसी महिला होंगी तथा निर्भयता पूर्ण अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी। शत्रुओं को पराजित करने में आप हमेशा सक्षम रहेंगी तथा वे आपका विरोध करने में सर्वदा असमर्थ रहेंगे इसके अतिरिक्त उच्चाधिकार वर्ग तथा धनवानों से आपके विशेष संवध रहेंगे।इनसे आप पूर्ण मान सम्मान प्राप्त करेंगी।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

विभिन्न प्रकार की कलाओं में आप निपुण रहेंगी तथा स्वभाव से अत्यन्त ही सुशील होंगी एवं आपका चरित्र भी निर्मल रहेगा। आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को प्रकट करने में कभी भी कोई संकोच नहीं करेंगी।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के सभी अंग पुष्ट तथा सुन्दरता से युक्त रहेंगे। साथ ही आप

अपने परिवार में श्रेष्ठ समझी जाएंगी। एवं समस्त परिवार आपको यथायोग्य स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त इंजीनियरिग के क्षेत्र में आप विशेष सफलता भी प्राप्त कर सकती हैं।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक शूरवीर तथा साहसी महिला होंगी एवं आजीवन सत्य का पालन करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपकी बुद्धि स्थिर रहेंगी तथा चंचलता का इसमें अभाव रहेगा। आप दूसरों के प्रति हमेशा अपने मन में प्रेम तथा सम्मान की भावना रखेंगी। आप एक गुणवान तथा बुद्धिमान व्यक्ति की पत्नी बनने के सौभाग्य को प्राप्त करेंगी। नाना प्रकार के कार्यों को करने में आप निपुण होंगी। अपनी मधुर वाणी से सब को प्रभावित करेंगी। परन्तु शरीर से आप तनिक स्थूल रहेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आपके द्वारा परिवार जनों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। परन्तु समाज में आप पूर्ण रूप से लोक प्रिय रहेंगी।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप कई प्रकार के सद्गुणों से सुशोभित रहेंगी तथा समाज में पूजयनीय तथा आदरणीय रहेंगी। अन्य भाई बहिनों में आप श्रेष्ठ होंगी तथा समाज के सभी वर्गो में लोकप्रिय रहेंगी। देवता, ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा। आप मधुर गति से गमन भी करेंगी।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुर्वर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी अधिक बातें बोलने की रहेगी। आपके हृदय में भी दया का भाव मध्यम रूप से रहेगा। आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहस पूर्ण अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। कभी कभी आप अनायास ही छोटी छोटी बातों में भी अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगी। आपमें विवाद करने की प्रवृति भी रहेगी तथा अन्य लोगों से आपका परस्पर विवाद चलता रहेगा। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम होने के कारण शारीरिक बल पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज के लोगों से आपका यदा कदा परस्पर विरोध भी रहेगा।

जीवन में आप उन्माद या प्रमेह रोग से भी ग्रसित रह सकती हैं। आपका शारीरिक स्वरूप सामान्रयतया सुन्दर ही रहेगा तथा आप कभी कभी कठोर वाणी का उपयोग भी

अपने संभाषण करेंगी। जिससे अन्य जन आपसे अप्रसन्न ही रहेंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

श्वान योनि में जन्म होने के कारण आप हमेशा अपने कार्यों को साधने में तत्पर रहेंगी तथा उत्साह के भाव से भी आप युक्त रहेंगी। अतः अपनी उत्साही प्रवृति से अधिकांश कार्यों में सफलता अर्जित कर सकती हैं। आप एक साहसी तथा निर्भय महिला भी होंगी। जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने भाई बन्धुओं से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे। माता पिता के प्रति आपके मन में निष्काम सेवा भाव रहेगा प्रयत्न पूर्वक उनकी सेवा में सर्वदा अनुरक्त रहेंगी।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

आपके जन्मकाल में सूर्य की स्थिति चतुर्थ भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। धन वैभव से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको सहयोग प्रदान करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आप उनसे समान्यतया धन सम्मान एवं वाहनादि भी प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही वे व्यापार तथा अजीविका सम्बन्धी कार्यों

में भी आपकी सहायता करेंगे।

आपके मन में उनके प्रति सामान्य श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा एवं इच्छानुसार यदाकदा उनकी आज्ञा का अनुपालन भी करती रहेंगी। परन्तु आपके आपसी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे एवं परस्पर कई प्रकार के मतभेद विद्यमान रहेंगे फिर भी आप अपनी ओर से उन्हें कम से कम कष्टानुभूति के लिये सतत् प्रयत्नशील रहेंगी एवं अवसरानुकूल उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्र योग, तैतिल करण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा कन्या राशि चन्द्रमा अशुभ फल दाता रहेंगे अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,11 तिथियां भरणी नक्षत्र, वज्र योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा कन्या राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा सवस्थ्य के प्रति ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो, मानसिक उद्विग्नता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य कार्यों में सिद्ध नही मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए एवं मंगलवार तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए, साथ साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीतपुष्प, चने की दाल, हल्दी आदि, पदार्थो का श्रद्धा पूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप कराने चाहिए। इससे आपके समस्त अशुभ फल कम होंगे तथा अन्य लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com